Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes forB.A part 2, part 3

Topic:–अरबों का सिंध-विजय के परिणाम (Effects of the Arab Conquest of Sindh)

सिंध पर अरब-आक्रमणकारियों की विजय भारतीय इतिहास की एक विशेष घटना है। अरबों की सिंध-विजय के परिणामों को विभिन्न इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से देखा है। इतिहासकार लेनपूल के विचार में "सिंघ की विजय भारत और इस्लाम के इतिहास में घटना मात्र था, परिणामविहीन विजयमात्र थी।" वुल्जे हेग ने भी इस घटना को 'प्रसंगमात्र' माना है। आर सी मजूमदार इसे एक 'महत्त्वहीन परिणामवाली घटना' मानते हैं। इन विद्वानों के अनुसार सिंध की अरब विजय का कोई स्थायी परिणाम नहीं निकला। कुछ दूसरे विद्वानों की धारणा है कि आक्रमण न तो उतना महत्वहीन था जैसा भारत और न ही उतना महत्वपूर्ण जितना कुछ अन्य के बहुत कुछ भारत पर ईरानी और यूनानी आक्रमण दृष्टिकोण से अरबों की दहल गया। वास्तविकता यह है कि अरब कुछ विद्वानों ने प्रमाणित करने का प्रयास किया है इतिहासकार मानते है। अरब आक्रमण के परिणाम हूणों के समान ही हुए।पर ही अधिकार कर सके, सिंध से आगे बढ़ने का अस्थायी ई। अरबवासी सिर्फ सिंध सिद्ध हुई। नही है। ने इसमें उन्हें से नही मिल सका। यद्यपि अरबों ने सिंघ प्रदेश के प्रशासन के लिए कोई उचित व्यवस्था भी नहीं का नहीं मिल सकी। अरबों की। इसका प्रशासन वे भारतीयों की सहायता करने लगे। इस प्रकार, अरबों ने जैसी सफलता लता एशिया, अफ्रीका यूरोप के विभिन्न भागों में प्राप्त की, वैसी सफलता उन्हें सिंघ में महता मिल सकी। इसीलिए आरसी मजूमदार इसे 'महत्त्वहीन परिणामवाली घटना' मानते है। फिर कार करना ही पड़ेगा कि राजनीतिक दृष्टिकोण से अरबों की विजय महत्त्व फिर भी, यह तथ्य तो नहीं थी। एक विद्वान के अनुसार, "अरबों ने एक ऐसी चुनौती प्रस्तुत परिणामविहीन की, जिसका सामना करने के लिए विभिन्न शक्तियाँ उदित हुई, जो भारत में आगामी 300 क्यो गुर्जर-प्रतिहारों, राष्ट्रकूटों और चालुक्यों की प्रतिष्ठा की स्थापना उनके द्वारा करने के कारण हुई। दीर्घकालिक दृष्टि से भी अरबों ने राजनीतिक कांच में वर्षों तक बनी रहीं। अरबों का विरोध महत्त्वपूर्ण नीति का प्रबलन किया उन्होंने इस्लामधर्म और इस्लामी राज्य के बीच अंतर एक महर अलाउद्दीन खिलजी, मोहम्मद बिन तुगलक और शेरशाह ने धर्मपंथियों पर बे और राज्य के मामलों में उनके हस्तक्षेप पर जो प्रतिबंध लगाए थे, उस के उपर्युक्त दृष्टिकोण में दिखाई देते हैं।" अरबों की विजय ने तुर्की-विजय तैयार कर दी। मध्ययुग मे जो अंकुश लगाए नीति के बीज अरबों विजय की पृष्ठभूमि भी सिंध-विजय के सांस्कृतिक परिणाम भी महत्त्वपूर्ण हुए। आरंभ में अरबों ने उत्पाद दिखाया, मंदिरों को सिंध में धार्मिक तोड़कर मस्जिदें बनवाई, जबर्दस्ती इस्लामधर्म कबूल करने को बाध्य

पहार-इस्लाम धर्मियों की हत्याएँ करवाई तथा उन्हें गुलाम बनाया त सिंध में बस जाने के पश्चात उनका यह धार्मिक जोश ठंडा पड़ गया। तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों से बाध्य होकर उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। मंदिरों का तोड़ना बंद हे गया; जैसे मुलतान का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर नहीं तोड़ा गया। हिंदुओं को भी महत्त्वपूर्ण प्रसाशनिक पद सौंपे गए। उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता भी दी गई, सिर्फ इस्लामधर्म स्वीकार नहीं करनेवालों से जजिया वसूला गया। उनकी इस नीति से भारत में इस्लामधर्म की स्थापना सहज ही हो गई। अरबों ने भारतीयों से सामाजिक संपर्क स्थापित किया तथा वैवाहिक संबंध भी बनाए। इससे अरब तथा भारतीय और नजदीक आए। भारतीय मुसलमानों का एक नया वर्ग पहली बार इसी समय उभरा। डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव का यह विचार कि सांप्रदायिक मतभेद एवं भारत के विभाजन की नींव सिंध-विजय के फलस्वरूप पड़ी, नितांत सांप्रदायिक एवं असंगत है। इसके विपरीत, अरबों से संपर्क के कारण दोनों देशों के संबंध निकट हुए तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी हुए। यद्यपि भारतीय इस सांस्कृतिक संपर्क से बहुत ज्यादा लाभ नहीं उठा सके, तथापि अरबों के सहयोग से भारतीय व्यापारी पश्चिमी जगत, विशेषतया अफ्रीका, में अपनी व्यापारिक गतिविधियाँ बनाए रख सके। सिंध अब एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बन गया।अरबों ने भारत से अनेक नई बातें ग्रहण कीं तथा उनका प्रचार यूरोप में भी किया। भारतीय कला, धर्म, दर्शन और ज्ञान-विज्ञान ने अरबों को अत्यधिक प्रभावित किया। प्रसिद्ध विद्वान हेवेल के अनुसार, "यह भारत था, यूनान नहीं, जिसने इस्लाम को उसकी युवावस्था में शिक्षा दी, उसके अनुसार और रहस्यवादी विचारों का निर्माण किया तथा साहित्य, कला एवं स्थापत्य में इसकी विशिष्ट अभिव्यक्ति को अनुप्राणित किया।" सिंध-विजय के पश्चात अनेक -विद्वान यहाँ आए और यहाँ के अनेक ग्रंथों को अपने साथ ले जाकर फारसी में उनका अनुवाद निकाला। खलीफा मंसूर के समय में भारत से ब्रह्मगुप्त-लिखित ब्रह्मसिद्धांत तथा अबुरखाच ले जाकर अरबों ने भारतीय विद्वानों की सहायता से उनका अरबी में अनुवाद खण्डनस्थाया ले इसी प्रकार, पंचतंत्र को भी अनुदित किया गया। ऐसा माना जाता है कि सूफी-संप्रदाय भी बौद्धधर्म से प्रभावित हुआ। निकल्सन के अनुसार, "सूफीधर्म के अनेक सिद्धांत-जैसे, सूफियों का संतवाद, माला धारण करने का ढंग, फना (निर्वाण) का सिद्धांत और उसे प्राप्त करने के लिए विभिन्न अवस्थाओं (मुलाकात) संबंधी विश्वास भारतीय दर्शन और विश्वासों, विशेषतः बौद्ध विश्वासों से प्रभावित थे।" चिकित्साशास्त्र, ज्योतिष, रसायन और गणित का ज्ञान भी अरबों ने भारत से सीखा। अलबेरुनी के अनुसार अरबों द्वारा प्रयुक्त संख्याओं के चिह्न "हिंदू चिह्नों के सर्वसुंदर स्वरूपों से निकले थे।" अमीर खुसरो भी अबू संज्ञया नामक अरब सिद्धांत ज्योतिषी पर भारतीय प्रभाव का उल्लेख करता है। अरबों ने शून्य का ज्ञान भारत से ही प्राप्त किया। अरबों की चित्रकला, संगीत एवं स्थापत्यकला के विकास में भी भारतीयों का योगदान रहा। अतः, अरबों की सिंध-विजय 'परिणामविहीन विजयमात्र नहीं थी, जैसा कि लेनपूल महोदय सुझाते हैं। राजनीतिक दृष्टिकोण से बहुत अधिक महत्वपूर्ण नहीं होते हुए भी अरबों की सिंघ-विजय के दूरगामी परिणाम निकले। वी० एस० पाठक के शब्दों में "जीवन, विज्ञान और धर्म के अनेक क्षेत्रों में सिंध में अरब अधिकारियों के साथ एक ऐसे युग का सूत्रपात हुआ, जिसे हिंदू-मुसलमान संस्कृतियों के भविष्य में होनेवाले पारस्परिक आदान-प्रदानों की पूर्वपीठिका कहना अनुपयुक्त न होगा।"